UP Board Class 10 Social Science 2024 Code : 825 (IX) Question Paper with Solutions

Time Allowed : 3 Hours 15 Minutes	Maximum Marks : 70	Total Questions : 29

General Instructions

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।
3. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों, अ और व में विभाजित है ।
4. खण्ड-अ में 20 अंक के 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं । इनका उत्तर आं.एम.आर. शीट पर दिया जाना है ।
5. ओ.एम.आर. शीट पर उत्तर अंकित किए जाने के पश्चात उसे काटे नहीं तथा इरेज़र (Eraser) एवं व्हाइटनर (Whitener) आदि का प्रयोग न करें ।
6. खण्ड-व 50 अंकों का है । इसमें दो प्रकार के प्रश्न हैं, वर्णनात्मक-1 तथा वर्णनात्मक-2 / मानचित्र सम्बन्धी दो प्रश्न (प्र.सं. 29 (क) व 29 (ख)) हैं ।
7. प्रत्येक प्रश्न के लिए निर्धारित अंक उसके सम्मुख अंकित हैं ।
8. दिए गए मानचित्रों को प्रश्न-पत्र से फाड़कर, उन पर उत्तर अंकित कीजिए तथा मानचित्रों को उत्तर-पुस्तिका में मज़बूती के साथ अवश्य संलग्न कीजिए ।
9. दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए मानचित्र-कार्य के स्थान पर अलग से प्रश्न लिखने के लिए दिए गए हैं ।

खण्ड - अ
(बहुविकल्पीय प्रश्न)

निर्देश : नीचे दिए गए प्रश्नों के प्रत्येक के चार विकल्प दिए गए हैं। सही विकल्प चुनकर उसे OMR उत्तर-पत्रक पर चिह्नित कीजिए।

1. निम्नलिखित में से कौन-सा आन्दोलन महात्मा गाँधी ने नहीं चलाया ?

(A) असहयोग आन्दोलन
(B) सविनय अवज्ञा आन्दोलन
(C) चम्पारन आन्दोलन
(D) खिलाफत आन्दोलन

Correct Answer : (D) खिलाफत आन्दोलन

उत्तर : महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन और चम्पारन आन्दोलन चलाए थे, लेकिन उन्होंने खिलाफत आन्दोलन को नहीं चलाया। खिलाफत आन्दोलन का नेतृत्व मुख्य रूप से मोहम्मद अली और शौकत अली ने किया था।

Quick Tip

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई महत्वपूर्ण आन्दोलन हुए, जिनमें असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, और चम्पारन आन्दोलन प्रमुख हैं।

---

2. 1789 में फ्रांस में राष्ट्रवाद की प्रथम अभिव्यक्ति का क्या परिणाम हुआ ?

(A) फ्रांस की क्रान्ति
(B) नेपोलियन का उदय
(C) जर्मनी का एकीकरण
(D) निरंकुश राजतंत्र का प्रारम्भ

Correct Answer : (A) फ्रांस की क्रान्ति

उत्तर : 1789 में फ्रांस में राष्ट्रवाद की प्रथम अभिव्यक्ति के परिणामस्वरूप फ्रांस की क्रान्ति हुई। इस क्रान्ति ने न केवल फ्रांस की राजनीतिक संरचना को बदल दिया, बल्कि पूरी दुनिया में राष्ट्रवाद और लोकतंत्र के सिद्धांतों को प्रोत्साहित किया।

Quick Tip

फ्रांस की क्रान्ति ने मानवाधिकार, समानता और नागरिक स्वतंत्रता के महत्व को उभारा, जो बाद में अन्य देशों के स्वतंत्रता संग्रामों में प्रेरणा बना।

---

3. 'गुलामगिरी' के लेखक कौन थे ?

(A) ई.वी. रामास्वामी
(B) ज्योतिबा फुले
(C) भीमराव रामजी अम्बेडकर
(D) बाल गंगाधर तिलक

Correct Answer : (B) ज्योतिबा फुले

उत्तर : 'गुलामगिरी' के लेखक ज्योतिबा फुले थे । इस पुस्तक में उन्होंने समाज में व्याप्त जातिवाद और शोषण के खिलाफ आवाज उठाई थी और भारतीय समाज में समानता की आवश्यकता को व्यक्त किया था ।

Quick Tip

ज्योतिबा फुले भारतीय समाज में दलितों और महिलाओं के अधिकारों के लिए एक महान संघर्षकर्ता थे, और उनकी पुस्तक 'गुलामगिरी' उनके इस संघर्ष का प्रतीक है ।

---

4. 1929 की महामंदी का प्रमुख कारण क्या था ?

(A) कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन
(B) कृषि क्षेत्र में न्यून उत्पादन
(C) बेरोज़गारी
(D) प्रमुख बैंकों का ध्वंसायी होना

Correct Answer :(D) प्रमुख बैंकों का ध्वंसायी होना

उत्तर : 1929 की महामंदी का प्रमुख कारण कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन था । इसके कारण कृषि मूल्य गिर गए, जो आर्थिक संकट का कारण बने । इसके परिणामस्वरूप बेरोज़गारी और आर्थिक संकट पैदा हुआ, जो महामंदी का कारण बना ।

Quick Tip

महामंदी की स्थिति में कृषि उत्पादों की अधिकता और उनकी मूल्य में गिरावट ने आर्थिक असंतुलन को जन्म दिया, जिससे बेरोज़गारी और मंदी का सामना करना पड़ा ।

---

5. 1944 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना कहाँ की गई थी ?

(A) ब्रिटेन
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका
(C) फरांस
(D) भारत

Correct Answer : (B) संयुक्त राज्य अमेरिका

उत्तर : 1944 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक आर्थिक स्थिरता बनाए रखना और देशों के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना था।

> **Quick Tip**
>
> IMF का उद्देश्य वैश्विक वित्तीय संकटों से निपटना और विकासशील देशों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है।

---

6. श्रीलंका में निम्नलिखित में से कौन-सा समूह अल्पसंख्यक है ?

(A) तमिल
(B) ईसाई
(C) सिंहली
(D) मुस्लिम

Correct Answer : (A) तमिल

उत्तर : श्रीलंका में तमिल समुदाय अल्पसंख्यक है। सिंहली समुदाय वहाँ का प्रमुख जातीय समूह है, जबकि तमिल समुदाय एक अल्पसंख्यक समूह के रूप में रहता है।

> **Quick Tip**
>
> श्रीलंका में जातीय तनाव और संघर्षों का इतिहास है, जिसमें तमिल समुदाय के अधिकारों को लेकर संघर्ष हुआ है।

---

7. भारत में संघीय व्यवस्था है क्योंकि :

(A) यहाँ शक्तियों का विकेन्द्रीकरण है।
(B) यहां शक्तियों का केन्द्रीयकरण है।
(C) संविधान लचीला है।
(D) उपयुक्त में कोई नहीं

Correct Answer : (A) यहाँ शक्तियों का विकेन्द्रीकरण है।

उत्तर : भारत में संघीय व्यवस्था है क्योंकि यहाँ शक्तियों का विकेन्द्रीकरण किया गया है। संघीय व्यवस्था का मतलब है कि विभिन्न स्तरों पर, जैसे केंद्र और राज्य, के पास अपनी-अपनी शक्तियाँ होती हैं।

Quick Tip

संघीय व्यवस्था के तहत राज्यों को कुछ मामलों में स्वायत्तता प्राप्त होती है, जबकि कुछ मामलों में केंद्र सरकार का अधिकार होता है ।

---

8. निम्नलिखित में से कौन-सा संघीय राज्य नहीं है ?

(A) मणिपुर
(B) हिमाचल प्रदेश
(C) दिल्ली
(D) त्रिपुरा

Correct Answer : (C) दिल्ली

उत्तर : दिल्ली एक संघीय राज्य नहीं है, बल्कि यह एक केंद्र शासित प्रदेश है । मणिपुर, हिमाचल प्रदेश और त्रिपुरा भारतीय संघ के राज्य हैं ।

Quick Tip

संघीय राज्य के तहत राज्यों को विशेष अधिकार और स्वायत्तता मिलती है, जबकि केंद्र शासित प्रदेशों में केंद्र सरकार का अधिक नियंत्रण होता है ।

---

9. निम्नलिखित में से किस व्यवस्था के लिए राजनीतिक दल आवश्यक शर्त हैं ?

(A) राजतंत्र
(B) लोकतंत्र
(C) नानाशाही
(D) मनाबाद

Correct Answer : (B) लोकतंत्र

उत्तर : राजनीतिक दल लोकतंत्र की अनिवार्य शर्त होते हैं क्योंकि वे नागरिकों को सरकार चुनने, नीतियाँ बनाने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान करते हैं ।

Quick Tip

राजतंत्र में राजाओं की सत्ता होती है और इसमें राजनीतिक दलों की आवश्यकता नहीं होती, जबकि लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का मुख्य योगदान होता है ।

---

10. निम्नलिखित में से किसका सम्बन्ध लोकतंत्र से नहीं है ?

(A) जनमत
(B) गजनीनिक टल
(C) उत्तरदायी शासन
(D) बहुसंख्यकों का शासन

Correct Answer : (D) बहुसंख्यकों का शासन

उत्तर : गजनीनिक टल का लोकतंत्र से कोई सम्बन्ध नहीं है । लोकतंत्र में जनमत, उत्तरदायी शासन और बहुसंख्यकों का शासन प्रमुख तत्व होते हैं ।

Quick Tip

लोकतंत्र में जनमत और बहुसंख्यकों का शासन का मतलब है कि अधिकतर लोग अपनी इ-च्छाओं के अनुसार निर्णय लेते हैं ।

---

11. निम्नलिखित में से कौन-सा खनिज धात्विक है ?

(A) कोयला
(B) अभ्रक
(C) चूना-पत्थर
(D) लौह-अयस्क

Correct Answer : (D) लौह-अयस्क

उत्तर : लौह-अयस्क एक धात्विक खनिज है । इसे खनिजों से निकालकर लोहे का उत्पादन किया जाता है । कोयला, अभ्रक और चूना-पत्थर अन्य प्रकार के खनिज हैं, लेकिन ये धात्विक नहीं हैं ।

Quick Tip

धात्विक खनिजों से धातुएँ निकाली जाती हैं, जो विभिन्न उद्योगों में उपयोगी होती हैं ।

---

12. कपास की खेती के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी मिट्टी उपयुक्त है ?

(A) काली मिट्टी
(B) लाल मिट्टी
(C) जलोढ़ मिट्टी
(D) लैटेराइट मिट्टी

Correct Answer : (A) काली मिट्टी

उत्तर : कपास की खेती के लिए काली मिट्टी (जिसे रेज़ोला मिट्टी भी कहा जाता है) उपयुक्त होती है । यह मिट्टी कपास के पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होती है ।

Quick Tip

काली मिट्टी विशेष रूप से उन क्षेत्रों में पाई जाती है जहां वर्षा अच्छी होती है, और यह कपास जैसे उष्णकटिबंधीय पौधों के लिए आदर्श है ।

---

13. निम्नलिखित में से कौन-से उद्योग में कच्चे माल के रूप में बॉक्साइट का प्रयोग किया जाता है ?

(A) सीमेंट
(B) ऐलुमिनियम
(C) लोहा एवं इस्पात
(D) कागज़

Correct Answer : (B) ऐलुमिनियम

उत्तर : बॉक्साइट का उपयोग ऐलुमिनियम उद्योग में कच्चे माल के रूप में किया जाता है । यह ऐलुमिनियम धातु का मुख्य स्त्रोत है ।

Quick Tip

बॉक्साइट में ऐलुमिनियम की अधिकांश सामग्री होती है, और इसका उपयोग विभिन्न धातु उद्योगों में किया जाता है ।

---

14. निम्नलिखित में से किसको सेवा क्षेत्रक भी कहते हैं ?

(A) प्राथमिक क्षेत्रक
(B) द्वितीयक क्षेत्रक
(C) तृतीयक क्षेत्रक
(D) चतुर्थक क्षेत्रक

Correct Answer : (C) तृतीयक क्षेत्रक

उत्तर : तृतीयक क्षेत्रक को सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है । इस क्षेत्र में बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और पर्यटन जैसी सेवाएँ शामिल होती हैं ।

Quick Tip

सेवा क्षेत्रक का कार्य उपभोक्ताओं को सेवाएँ प्रदान करना होता है, न कि भौतिक वस्तुएँ ।

---

15. सार्वजनिक क्षेत्रक तथा निजी क्षेत्रक के विभाजन का आधार है :

(A) रोज़गार की शर्तें
(B) आर्थिक गतिविधियों की प्रकृति
(C) उद्यमों का स्वामित्व
(D) उद्यमों में नियोजित श्रमिकों की संख्या

Correct Answer : (C) उद्यमों का स्वामित्व

उत्तर : सार्वजनिक क्षेत्रक और निजी क्षेत्रक के विभाजन का मुख्य आधार उद्यमों का स्वामित्व होता है। सार्वजनिक क्षेत्रक में राज्य या सरकार का स्वामित्व होता है, जबकि निजी क्षेत्रक में निजी व्यक्तियों या कंपनियों का स्वामित्व होता है।

> **Quick Tip**
>
> सार्वजनिक क्षेत्रक के उद्यमों में सरकार का नियंत्रण होता है, जबकि निजी क्षेत्रक में निजी कंपनियाँ और व्यक्तियों का नियंत्रण होता है।

---

16. एजेण्डा-21 का सम्बन्ध किससे है ?

(A) ओज़ोन क्षरण (अबक्षय) से
(B) जलवायु परिवर्तन से
(C) वैश्विक तापन से
(D) सततपोषणीय (संधारणीय) विकास से

Correct Answer : (D) सततपोषणीय (संधारणीय) विकास से

उत्तर : एजेण्डा-21 का सम्बन्ध सततपोषणीय (संधारणीय) विकास से है। यह संयुक्त राष्ट्र का एक पहल है, जो वैश्विक स्तर पर पर्यावरण और सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए कार्य करता है।

> **Quick Tip**
>
> एजेण्डा-21 का उद्देश्य पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाए रखना है, ताकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

---

17. उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम कब बना था ?

(A) 1980
(B) 1990
(C) 1986
(D) 2001

Correct Answer : (C) 1986

उत्तर : उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम 1986 में बना था। यह अधिनियम उपभोक्ताओं के अधिकारों की सुरक्षा और उनके खिलाफ होने वाले धोखाधड़ी के मामलों पर निवारण के लिए लागू किया गया था।

> **Quick Tip**
>
> उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों की जानकारी देने और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए महत्वपूर्ण कदम है।

---

18. बांग्लादेश के ग्रामीण बैंक की शुरुआत कब हुई थी ?

(A) 1960
(B) 1980
(C) 1970
(D) 1990

Correct Answer : (C) 1970

उत्तर : बांग्लादेश के ग्रामीण बैंक की शुरुआत 1970 में हुई थी। यह बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों को सूक्ष्म ऋण (Microfinance) प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था।

> **Quick Tip**
>
> ग्रामीण बैंक ने बांग्लादेश में छोटे किसानों और गरीबों के लिए बैंकिंग सेवाओं को सुगम बनाया और उनका जीवन स्तर सुधारने में मदद की।

---

19. निम्नलिखित में से कौन-सा जैव-संसाधन है ?

(A) लोहा
(B) ताँबा
(C) मत्स्य पालन (उद्योग)
(D) चट्टानें

Correct Answer : (C) मत्स्य पालन (उद्योग)

उत्तर : मत्स्य पालन (उद्योग) एक जैव-संसाधन है, क्योंकि यह जीवित जैविक संसाधनों, जैसे मछलियों और अन्य जल जीवों से संबंधित है। लोहा, ताँबा और चट्टानें खनिज संसाधन होते हैं।

> **Quick Tip**
>
> जैव-संसाधन उन संसाधनों को कहा जाता है जो जीवित जीवों से प्राप्त होते हैं, जैसे मछलियाँ, वनस्पतियाँ, और कृषि उत्पाद।

---

20. निम्नलिखित में से किस देश का मानव विकास सूचकांक सर्वोच्च है ?

(A) बांग्लादेश
(B) पाकिस्तान
(C) श्रीलंका
(D) नेपाल

Correct Answer : (C) श्रीलंका

उत्तर : श्रीलंका का मानव विकास सूचकांक (HDI) सर्वोच्च है । श्रीलंका ने शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार करके अपने मानव विकास सूचकांक को बेहतर बनाया है ।

> **Quick Tip**
>
> मानव विकास सूचकांक (HDI) जीवन स्तर, शिक्षा और स्वास्थ्य के आधार पर देशों के विकास की तुलना करने का एक उपाय है ।

खण्ड - ब

वर्णनात्मक-1 : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए ।

21. भारत की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पर प्रथम विश्व युद्ध के प्रभावों का विश्लेषण कीजिए ।

उत्तर : प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) का भारत की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ा ।
आर्थिक प्रभाव : 1. **मूल्य वृद्धि और महंगाई :** युद्ध के कारण ब्रिटिश साम्राज्य को युद्ध सामग्री की आपूर्ति के लिए धन की आवश्यकता थी, जिससे भारत से संसाधनों की अत्यधिक निकासी की गई । इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में वस्त्र, खाद्य पदार्थों और अन्य आवश्यक सामान की कीमतों में वृद्धि हुई, जिससे आम जनता पर आर्थिक दबाव पड़ा ।

2. **करों में वृद्धि :** युद्ध के वित्तीय बोझ को पूरा करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने भारत में विभिन्न करों में वृद्धि की । इस कारण किसानों और श्रमिक वर्ग को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा ।

3. **व्यापार और उद्योग पर प्रभाव :** युद्ध के कारण ब्रिटेन ने भारतीय कच्चे माल की आपूर्ति की अधिकता के कारण भारतीय उद्योगों को उन्नति का अवसर प्रदान किया । वहीं, युद्ध के बाद के समय में भारतीय उद्योगों की स्थिति कमजोर हुई, क्योंकि ब्रिटेन ने अपनी औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाया और भारतीय बाजार पर अपनी प्रभुता बनाए रखी ।

राजनीतिक प्रभाव :
1. **राष्ट्रीय आंदोलन में वृद्धि :** युद्ध के दौरान भारत में ब्रिटिश शासन के प्रति विरोध में तेजी आई । भारतीय नेताओं ने युद्ध के दौरान भारत को आत्मनिर्भर बनाने की मांग उठाई । महात्मा गांधी और अन्य नेताओं ने असहमति व्यक्त की और राष्ट्रीय आंदोलन को नया बल दिया ।

2. **ब्रिटिश शासन की नीतियों में बदलाव :** ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सैनिकों के बल पर युद्ध लड़ा, लेकिन इसके बावजूद उसने भारतीयों को राजनीतिक अधिकारों में कोई विशेष बदलाव नहीं दिया। इससे भारतीयों में असंतोष और नाराजगी बढ़ी। यह असंतोष 1919 के जलियांवाला बाग हत्याकांड जैसे घटनाओं में सामने आया।

3. **नई राजनीतिक पार्टियों और आंदोलन का जन्म :** प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारतीय राजनीति में बदलाव आया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य संगठन अधिक उग्र और आक्रामक हो गए, और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम को और भी तेज कर दिया।

निष्कर्ष : प्रथम विश्व युद्ध ने भारत की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को कई दृष्टिकोणों से प्रभावित किया। आर्थिक दृष्टि से महंगाई, करों की वृद्धि और संसाधनों की निकासी से जनता पर दबाव पड़ा। वहीं, राजनीतिक दृष्टि से यह युद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गति को तेज करने वाला महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ।

Quick Tip

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय समाज और राजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव किए, जिससे भारत में स्वतंत्रता संग्राम को और गति मिली।

अथवा

प्रौद्योगिकी ने किस प्रकार वैश्वीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया ? किन्हीं दो कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : प्रौद्योगिकी ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति से बढ़ावा दिया है। निम्नलिखित दो प्रमुख कारण हैं, जिनके द्वारा प्रौद्योगिकी ने वैश्वीकरण में योगदान दिया :
1. संचार तकनीकी में उन्नति : प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक प्रमुख योगदान संचार तकनीकों का विकास है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, और सैटेलाइट संचार जैसे उपकरणों ने दुनिया को एक "ग Global Village" बना दिया है। इन उपकरणों ने वैश्विक स्तर पर जानकारी और विचारों के आदान-प्रदान को आसान और तेज बना दिया। जिससे व्यापार, शिक्षा, संस्कृति, और राजनीति के विभिन्न क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा मिला।

2. परिवहन में सुधार : प्रौद्योगिकी ने परिवहन के क्षेत्र में भी अद्वितीय सुधार किए हैं। उच्च गति वाले रेल, विमानों और कंटेनर शिपिंग जैसी तकनीकों ने उत्पादों और सेवाओं के वैश्विक परिवहन को तेज, सस्ता और अधिक प्रभावी बना दिया। इससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई, और कंपनियों ने वैश्विक स्तर पर अपने उत्पादों और सेवाओं का विस्तार किया।

निष्कर्ष : प्रौद्योगिकी ने संचार और परिवहन में सुधार के द्वारा वैश्वीकरण की प्रक्रिया को अधिक सुलभ और प्रभावी बना दिया। इसने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को बढ़ावा दिया और व्यापार के नए अवसर पैदा किए।

Quick Tip

प्रौद्योगिकी ने दुनिया को एक सघन नेटवर्क के रूप में जोड़ने में मदद की, जिससे वैश्वीकरण की प्रक्रिया और भी तेज हो गई ।

---

22. "लोकतंत्र सभी सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान करता है ।" इस कथन की तर्कों सहित पुष्टि कीजिए ।

उत्तर : लोकतंत्र के सिद्धांतों और व्यवस्थाओं ने हमेशा यह दावा किया है कि यह समाज के सभी पहलुओं में सुधार करता है और समस्याओं का समाधान प्रदान करता है । निम्नलिखित तर्कों के माध्यम से इस कथन की पुष्टि की जा सकती है :

1. अधिकारों और स्वतंत्रता की सुरक्षा : लोकतंत्र में हर नागरिक को अपने विचारों, विश्वासों और अभिव्यक्तियों की स्वतंत्रता मिलती है । यह सभी वर्गों के लोगों को समान अवसर प्रदान करता है, जो समाज की सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के समाधान में सहायक होता है । जैसे, महिलाओं, दलितों, और अल्पसंख्यकों के अधिकारों का संरक्षण होता है ।

2. प्रतिनिधित्व और भागीदारी : लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को चुनावों के माध्यम से अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है । यह सुनिश्चित करता है कि सरकार जनता की इच्छाओं और आवश्यकताओं के अनुसार कार्य करे । इससे सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को हल करने में मदद मिलती है ।

3. जिम्मेदार शासन : लोकतंत्र में सरकार को जनता के प्रति जवाबदेह होना पड़ता है । यदि सरकार अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से नहीं निभाती है, तो चुनावों के माध्यम से उसे बदलने का अधिकार जनता को होता है । इससे शासन में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित होता है, जो सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान में सहायक होता है ।

4. विकास और समृद्धि : लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकारों को नागरिकों के विकास के लिए योजनाएं बनानी पड़ती हैं । शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, और सामाजिक कल्याण जैसी योजनाओं से आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जाता है । लोकतंत्र में स्थिरता और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है, जो समाज के विकास में सहायक है ।

निष्कर्ष : लोकतंत्र ने विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए एक मंच प्रदान किया है । यह तर्कों द्वारा यह सिद्ध होता है कि लोकतंत्र सभी समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है ।

Quick Tip

लोकतंत्र न केवल नागरिकों को अपने अधिकारों की रक्षा करने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि उन्हें विकास और सामाजिक कल्याण की दिशा में सक्रिय भागीदारी का भी मौका देता है ।

अथवा

राजनीतिक दलों के चार महत्त्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : राजनीतिक दल लोकतंत्र के अभिन्न अंग होते हैं और उनके कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य निम्नलिखित हैं :

1. सरकार का गठन : राजनीतिक दल चुनावों में भाग लेकर सरकार का गठन करते हैं । वे चुनावों के माध्यम से चुनावी प्रस्तावों और नीतियों को प्रस्तुत करते हैं और सरकार बनाने के लिए उम्मीदवारों को खड़ा करते हैं ।
2. नीतियों का निर्माण : राजनीतिक दल समाज के विभिन्न वर्गों की समस्याओं का समाधान करने के लिए नीतियाँ बनाते हैं । ये नीतियाँ विकास, गरीबी उन्मूलन, और समाज के अन्य मुद्दों से जुड़ी होती हैं ।
3. विपक्ष की भूमिका : राजनीतिक दल केवल सरकार बनाने का काम नहीं करते, बल्कि विपक्षी दल सरकार के कामकाज की आलोचना करते हैं और उसे सुधारने के लिए सुझाव देते हैं । इस प्रकार विपक्ष लोकतंत्र में पारदर्शिता और जिम्मेदारी सुनिश्चित करता है ।
4. सार्वजनिक जागरूकता और शिक्षा : राजनीतिक दल जनता को उनकी राजनीतिक अधिकारों, कर्तव्यों, और चुनावी प्रक्रिया के बारे में जागरूक करते हैं । वे जनता को सूचना प्रदान करने, शिक्षा देने और उनके लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूक करने का काम करते हैं ।
निष्कर्ष : राजनीतिक दल लोकतंत्र के स्तंभ होते हैं जो सरकार का गठन, नीतियाँ बनाना, विपक्ष की भूमिका निभाना, और सार्वजनिक जागरूकता फैलाने के कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

Quick Tip

राजनीतिक दल लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक हैं क्योंकि वे नीति निर्माण, चुनावी प्रक्रिया और सार्वजनिक जागरूकता में सक्रिय भूमिका निभाते हैं ।

---

23. एक संसाधन के रूप में मिट्टी के महत्त्व का उल्लेख कीजिए तथा भारत में पाई जाने वाली किन्हीं दो प्रकार की मिट्टियों का वर्णन कीजिए ।

उत्तर : मिट्टी एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो जीवन के लिए आवश्यक है । यह कृषि के लिए सबसे बुनियादी संसाधन है और विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करती है । मिट्टी से ही वनस्पतियाँ और पेड़-पौधे उगते हैं, जो पर्यावरण में ऑक्सीजन का संचार करते हैं और मानव जीवन के लिए आवश्यक भोजन, लकड़ी, औषधियाँ और अन्य उत्पाद प्रदान करते हैं ।
मिट्टी के महत्त्व के कुछ प्रमुख बिंदु :
1. **कृषि के लिए आधार :** मिट्टी कृषि के लिए सबसे जरूरी संसाधन है, जो फसलों की उगाई और उनकी वृद्धि के लिए पोषक तत्व प्रदान करती है ।

2. **पर्यावरणीय संतुलन :** मिट्टी जल, वायु और पोषक तत्वों के भंडारण के रूप में कार्य करती है, जिससे प्राकृतिक संतुलन बनाए रखा जाता है ।

3. **सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण :** कृषि पर निर्भर देशों के लिए मिट्टी एक आर्थिक संसाधन है, जो रोजगार और विकास के अवसर प्रदान करती है ।

भारत में पाई जाने वाली दो प्रमुख प्रकार की मिट्टियाँ :
1. **काली मिट्टी (रेज़ोला मिट्टी) :**
काली मिट्टी मुख्य रूप से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, और कर्नाटका के क्षेत्रों में पाई जाती है । यह मिट्टी कपास की खेती के लिए बहुत उपयुक्त मानी जाती है क्योंकि इसमें जल धारण की क्षमता अधिक होती है और यह पौधों के लिए पोषक तत्वों से भरपूर होती है ।

2. **लाल मिट्टी :**
लाल मिट्टी विशेष रूप से दक्षिण भारत, पश्चिम बंगाल और बिहार में पाई जाती है। यह मिट्टी बारीक कणों वाली होती है और इसमें आयरन का अंश अधिक होता है, जिससे यह लाल रंग की होती है। यह मिट्टी आमतौर पर चावल, गन्ना और ज्वार जैसी फसलों के लिए उपयुक्त होती है।

निष्कर्ष : मिट्टी न केवल कृषि के लिए आवश्यक है, बल्कि यह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने और आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। भारत में विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ मौजूद हैं, जिनका उपयोग कृषि के लिए किया जाता है।

Quick Tip

मिट्टी का सही उपयोग और संरक्षण कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए जरूरी है, साथ ही यह पर्यावरणीय स्थिरता के लिए भी आवश्यक है।

अथवा

विदेशी व्यापार से आप क्या समझते हैं ? विदेशी व्यापार को अनुकूल बनाने के लिए कोई दो सुझाव दीजिए।
उत्तर : विदेशी व्यापार का मतलब है एक देश का दूसरे देशों के साथ व्यापार करना, जिसमें वस्त्रों, उत्पादों, सेवाओं और पूंजी का आदान-प्रदान किया जाता है। यह व्यापार आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इससे देशों के बीच संसाधनों का वितरण होता है और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।
विदेशी व्यापार के लाभ :
1. **आर्थिक विकास :** विदेशी व्यापार से एक देश को अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ाने, रोजगार सृजन करने और आर्थिक विकास की दिशा में सुधार करने का अवसर मिलता है।

2. **विविधता में वृद्धि :** विदेशों से आयात किए गए उत्पादों और सेवाओं से देश की उपभोक्ता वस्त्रों और सेवाओं में विविधता आती है।

विदेशी व्यापार को अनुकूल बनाने के लिए सुझाव :

1. **विनिमय दरों का सुधार :** विदेशी व्यापार के लिए मुद्रा विनिमय दरों को स्थिर करना और उचित नीतियाँ लागू करना चाहिए, ताकि निर्यात और आयात में संतुलन बनाए रखा जा सके।

2. **निर्यात को बढ़ावा देना :** सरकार को निर्यात-उन्मुख नीतियाँ अपनानी चाहिए, जैसे कि निर्यातकों को कर में छूट देना, विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित करना और निर्यात के लिए आसान प्रक्रियाएँ बनानी चाहिए।

निष्कर्ष : विदेशी व्यापार किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सहायक होता है। इसके लिए उचित नीतियाँ और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के उपायों को लागू करना जरूरी है।

Quick Tip

विदेशी व्यापार से देशों के बीच संसाधनों का आदान-प्रदान होता है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी होता है ।

---

24. भारतीय कृषि पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर टिप्पणी कीजिए ।

उत्तर : वैश्वीकरण का भारतीय कृषि पर गहरा प्रभाव पड़ा है । वैश्वीकरण के कारण भारतीय कृषि में कई सकारात्मक और नकारात्मक बदलाव आए हैं ।
वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव : 1. **नए बाजारों तक पहुँच :** वैश्वीकरण के कारण भारतीय किसानों को वैश्विक बाजारों तक पहुँच मिली है, जिससे उनके उत्पादों की मांग और मूल्य बढ़े हैं । विशेष रूप से, भारतीय मसाले, चाय, और फल जैसी चीजों का निर्यात बढ़ा है ।

2. **तकनीकी उन्नति :** वैश्वीकरण के कारण कृषि तकनीकियों में सुधार हुआ है । अधिक उन्नत बीज, कृषि यांत्रिकीकरण, और सिंचाई तकनीकों ने उत्पादकता को बढ़ाया है ।

3. **वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता :** वैश्वीकरण के कारण विदेशी निवेश और सहायता भारतीय कृषि में आने लगी है, जिससे कृषि क्षेत्र में विकास हुआ है ।

वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभाव :
1. **कृषि संकट :** वैश्वीकरण ने छोटे किसानों को अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के सामने ला खड़ा किया है, जिससे उनकी आय में गिरावट आई है । बड़े पैमाने पर कृषि उत्पादों के आयात से भारतीय किसानों की स्थिति कमजोर हुई है ।

2. **पर्यावरणीय समस्याएँ :** उन्नत कृषि तकनीकों और उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता में कमी आई है और जलवायु परिवर्तन से कृषि उत्पादन प्रभावित हुआ है ।

3. **समाज में असमानता :** वैश्वीकरण से छोटे और बड़े किसानों के बीच अंतर बढ़ा है । बड़े किसान लाभ कमा रहे हैं, जबकि छोटे किसान संकट का सामना कर रहे हैं ।

निष्कर्ष : वैश्वीकरण ने भारतीय कृषि में कई सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव डाले हैं । जहां यह भारतीय किसानों के लिए नए अवसर लेकर आया है, वहीं छोटे किसानों के लिए चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है ।

Quick Tip

वैश्वीकरण भारतीय कृषि को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में लाता है, लेकिन यह किसानों के लिए अधिक समुचित नीतियों की आवश्यकता को भी उजागर करता है ।

अथवा

तृतीयक क्षेत्रक अन्य क्षेत्रकों से कैसे भिन्न है ? सोदाहरण व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : तृतीयक क्षेत्रक, जिसे सेवा क्षेत्रक भी कहा जाता है, अन्य दो प्रमुख क्षेत्रों—प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों से भिन्न है । इसमें मुख्य रूप से सेवाओं का उत्पादन और वितरण किया जाता है, न कि भौतिक वस्तुओं का ।

तृतीयक क्षेत्रक की विशेषताएँ : 1. **सेवाओं का उत्पादन :** तृतीयक क्षेत्रक में सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, जैसे कि स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा, बैंकिंग, परिवहन, और पर्यटन । उदाहरण के लिए, एक शिक्षक का काम शिक्षा देना, या एक बैंक कर्मचारी का काम पैसा जमा करना और निकालना है ।

2. **भौतिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं :** तृतीयक क्षेत्रक में भौतिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं किया जाता, जबकि प्राथमिक क्षेत्रक में कच्चे माल (जैसे कृषि, खनिज) और द्वितीयक क्षेत्रक में वस्त्र और निर्माण कार्य होते हैं ।

तृतीयक क्षेत्रक का उदाहरण : - **परिवहन :** परिवहन सेवाएँ जैसे बस, ट्रेन, और विमान यात्रा तृतीयक क्षेत्रक का उदाहरण हैं । ये वस्तुओं और लोगों की आवाजाही में सहायता करती हैं, लेकिन स्वयं में कोई भौतिक वस्तु का निर्माण नहीं करतीं । - **बैंकिंग सेवाएँ :** बैंकों द्वारा दी जाने वाली सेवाएँ जैसे जमा, ऋण, और भुगतान सेवाएँ भी तृतीयक क्षेत्रक की ही गतिविधियाँ हैं ।

निष्कर्ष : तृतीयक क्षेत्रक अन्य क्षेत्रों से भिन्न है क्योंकि यह भौतिक वस्तु का उत्पादन नहीं करता, बल्कि सेवाएँ प्रदान करता है, जो समाज की कार्यप्रणाली में सहायक होती हैं ।

Quick Tip

तृतीयक क्षेत्रक का विकास आर्थिक प्रगति और सामाजिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह रोजगार के अवसरों और आवश्यक सेवाओं का विस्तार करता है ।

---

25. महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए तीन सत्याग्रह आन्दोलनों के कारण और परिणाम बताइए ।

उत्तर : महात्मा गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तीन प्रमुख सत्याग्रह आंदोलनों का नेतृत्व किया, जिनका उद्देश्य ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक तरीके से विरोध करना था । इन आंदोलनों के कारण और परिणाम निम्नलिखित हैं :

1. चम्पारन सत्याग्रह (1917) : - **कारण :** चम्पारन सत्याग्रह का उद्देश्य बिन तामिल प्रथा के खिलाफ था, जिसमें किसानों से कच्चे रेशम की खेती करने के लिए जबरन बलात्कारी कार्य लिया जाता था । किसानों को भारी करों और अन्य शोषण का सामना करना पड़ा ।

- **परिणाम :** इस सत्याग्रह के परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने किसानों की परेशानियों को स्वीकार किया और उन्हें करों में राहत दी । इस आंदोलन ने गाँधीजी को भारतीय राजनीति में एक प्रमुख नेता के रूप में स्थापित किया ।

2. असहमति सत्याग्रह (1919) : - **कारण :** रौलेट एक्ट (1919) के खिलाफ यह आंदोलन शुरू किया गया, जिसे भारतीयों को बिना मुकदमे के गिरफ्तार करने का अधिकार मिलता था । यह कानून भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को कुचलने का एक तरीका था ।

- **परिणाम :** इस आंदोलन ने देशभर में व्यापक विरोध फैलाया, और महात्मा गाँधी की नेतृत्व क्षमता को और भी मजबूत किया । इसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार को रौलेट एक्ट को वापस लेना पड़ा ।

3. दांडी मार्च (1930) : - कारण : दांडी मार्च का उद्देश्य ब्रिटिश शासन द्वारा लगाए गए नमक कानून के खिलाफ था । गाँधीजी ने यह सत्याग्रह नमक पर कर लगाने के विरोध में किया, जो भारतीयों के लिए अत्यधिक शोषणकारी था ।
- परिणाम : दांडी मार्च ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक नया आंदोलन खड़ा किया और भारतीयों में एकजुटता का संचार किया । यह आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक निर्णायक मोड़ पर ले आया और अंततः ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ व्यापक विरोध फैल गया ।

निष्कर्ष : महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए सत्याग्रह आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अ-हिंसा के मार्ग पर मजबूती दी और ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय जनता में जागरूकता और एकता का संचार किया ।

Quick Tip

सत्याग्रह आंदोलनों ने अहिंसा और असहमति के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नया दिशा दी और भारतीयों को अपनी शक्ति का अहसास कराया ।

अथवा

सविनय अवज्ञा आन्दोलन कब चलाया गया ? यह क्यों चलाया गया ? इसका क्या प्रभाव पड़ा ?
उत्तर : सविनय अवज्ञा आन्दोलन महात्मा गाँधी द्वारा 1930 में शुरू किया गया था । यह आंदोलन ब्रि-टिश शासन द्वारा लागू किए गए नमक कानून और अन्य असंवैधानिक कानूनों के खिलाफ था ।

कारण : सविनय अवज्ञा आन्दोलन का मुख्य कारण था ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कानून का विरोध । नमक कानून के अनुसार, भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार नहीं था और उन्हें ब्रिटिश सरकार से नमक खरीदना पड़ता था । यह भारतीयों पर एक अत्यधिक शोषणकारी कर था ।

आन्दोलन का उद्देश्य : यह आंदोलन ब्रिटिश शासन द्वारा लगाए गए अवैध करों के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध था । गाँधीजी ने यह आह्वान किया था कि भारतीय नागरिकों को अपने अधिकारों का उल्लंघन करने वाले इन कानूनों का पालन नहीं करना चाहिए ।

प्रभाव : 1. **आंदोलन का फैलाव :** सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने पूरे देश में ब्रिटिश शासन के खिलाफ व्यापक विरोध को जन्म दिया । गाँधीजी के नेतृत्व में लाखों भारतीयों ने नमक कानून को तोड़ा और ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ अपनी आवाज उठाई ।

2. **राजनीतिक जागरूकता :** यह आंदोलन भारतीय जनता में राजनीतिक जागरूकता और स्वराज की आवश्यकता को महसूस कराया । इसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया मोड़ दिया ।

3. **ब्रिटिश शासन पर दबाव :** यह आंदोलन ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाने में सफल रहा और अंततः ब्रिटिश शासन ने नमक कानून में बदलाव किया और कई राजनीतिक बंदियों को रिहा किया ।

निष्कर्ष : सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नया जोश दिया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीयों को एकजुट किया । यह आंदोलन भारतीय समाज में अहिंसा और असहमति के माध्यम से प्रतिरोध के महत्व को उजागर करता है ।

Quick Tip

सविनय अवज्ञा आन्दोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक नए अध्याय की शुरुआत की और भारतीयों को उनके अधिकारों की रक्षा के लिए संगठित किया ।

---

26. "भारत में चुनाव कभी-कभी जातियों पर ही निर्भर करते हैं ।" क्यों ? इस स्थिति से छुटकारा पाने के लिए कोई दो उपाय सुझाइए ।

उत्तर : भारत में जातिवाद एक गहरी जड़ें जमा चुकी सामाजिक समस्या है, जो कभी-कभी चुनावों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । चुनावों में जातिवाद का प्रभाव इस प्रकार है :
चुनावों में जातिवाद पर निर्भरता के कारण : 1. **जाति आधारित राजनीति :** भारतीय राजनीति में अक्सर जातियाँ वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल होती हैं । राजनीतिक दलों को अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए जातिगत समीकरणों पर ध्यान केंद्रित करना पड़ता है, जिससे चुनावों में जातिवाद का प्रभाव बढ़ता है ।

2. **समाज में जातिगत असमानताएँ :** भारतीय समाज में जातियों के बीच असमानता और भेदभाव की लंबी परंपरा रही है । जातिवाद पर आधारित चुनाव प्रचार और उम्मीदवारों का चयन, खासकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में, जातियों के आधार पर वोटिंग को प्रभावित करता है ।

इस स्थिति से छुटकारा पाने के उपाय : 1. **शिक्षा और जागरूकता :** जातिवाद को समाप्त करने के लिए समाज में शिक्षा और जागरूकता फैलानी चाहिए । यदि लोगों में जातिवाद के खिलाफ समझ और विरोध उत्पन्न होता है, तो वे चुनावों में जाति के आधार पर नहीं, बल्कि उम्मीदवार की योग्यता और नीतियों को देखकर मतदान करेंगे ।

2. **जातिवाद विरोधी कानूनों का कड़ा पालन :** सरकार को जातिवाद को बढ़ावा देने वाले किसी भी प्रकार के चुनावी प्रचार पर प्रतिबंध लगाना चाहिए । इसके साथ ही जातिवाद के खिलाफ कड़े कानून लागू करने चाहिए, ताकि चुनावों में इस प्रकार के भेदभाव से बचा जा सके ।

निष्कर्ष : जातिवाद भारतीय राजनीति में एक बड़ी समस्या बनकर उभरा है, लेकिन इससे छुटकारा पाने के लिए शिक्षा, जागरूकता और कानूनी कड़े उपायों की आवश्यकता है ।

Quick Tip

जातिवाद से छुटकारा पाने के लिए समाज को जातिवाद की जगह समानता और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना चाहिए ।

अथवा

भारत में संघीय व्यवस्था की किन्हीं चार विशेषताओं की व्याख्या कीजिए ।
उत्तर : भारत में संघीय व्यवस्था की चार प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :
1. दो स्तरीय शासन प्रणाली : भारत में संघीय व्यवस्था में दो स्तर होते हैं - केंद्र (केंद्रीय सरकार) और राज्य (राज्य सरकार) । केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच शक्ति का विभाजन किया गया है । दोनों

स्तरों को अपनी-अपनी शक्तियाँ और अधिकार प्राप्त होते हैं ।

2. संविधान में शक्ति का वितरण : भारत के संविधान में केंद्र और राज्य सरकारों के अधिकारों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है । संविधान की तीन सूची होती हैं - संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची, जिनमें अलग-अलग विषयों पर केंद्र और राज्य सरकारों के अधिकारों का वितरण किया गया है ।

3. सर्वोच्चता का सिद्धांत : भारतीय संघीय व्यवस्था में संविधान की सर्वोच्चता होती है । यदि केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच किसी विषय पर विवाद उत्पन्न होता है, तो संविधान के अनुशासन के अनुसार विवाद का समाधान किया जाता है ।

4. केंद्र सरकार का विशेष अधिकार : भारत में संघीय व्यवस्था के अंतर्गत केंद्र सरकार के पास कुछ विशिष्ट शक्तियाँ होती हैं, जिनमें राज्यसभा के माध्यम से राज्य सरकारों पर लागू किए जाने वाले कुछ विशेष अधिकार और नियंत्रण शामिल होते हैं । केंद्र सरकार राष्ट्रीय हितों को लेकर राज्य सरकारों से ऊपर होती है ।

निष्कर्ष : भारत में संघीय व्यवस्था केंद्र और राज्य सरकारों के बीच शक्ति का बंटवारा करती है, जो एक दूसरे से स्वतंत्र होते हुए भी सहयोग करते हैं । यह व्यवस्था संविधान की सर्वोच्चता और केंद्र सरकार के विशेष अधिकारों से सशक्त होती है ।

Quick Tip

संघीय व्यवस्था में दो स्तरों पर शासन और संविधान द्वारा शक्ति के वितरण के कारण राष्ट्रीय एकता बनाए रखते हुए क्षेत्रीय विविधता का सम्मान किया जाता है ।

---

27. चावल की खेती हेतु उपयुक्त भौगोलिक दशाओं की विवेचना कीजिए तथा भारत में किन्हीं तीन प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए ।

उत्तर : चावल भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है, और इसकी खेती के लिए विशेष भौगोलिक दशाएँ आवश्यक होती हैं ।
चावल की खेती हेतु उपयुक्त भौगोलिक दशाएँ : 1. **जलवायु :** चावल की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय और उष्ण मौसम की आवश्यकता होती है । यह फसल गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी तरह से बढ़ती है, जहां वर्षा अधिक होती है ।

2. **मिट्टी :** चावल की खेती के लिए दलदली मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, जो जल धारण करने की क्षमता रखती है । यह मिट्टी नमी को लंबे समय तक बनाए रखने में सक्षम होती है, जिससे चावल की अच्छी फसल होती है ।

3. **जलवायु में नमी :** चावल को पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है, और इसलिए इसे सिंचाई की व्यवस्था भी चाहिए । मानसून के दौरान अधिक वर्षा वाली क्षेत्रों में चावल की खेती होती है ।

भारत में चावल के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र : 1. **पश्चिम बंगाल :** पश्चिम बंगाल भारत का सबसे बड़ा चावल उत्पादक राज्य है । यहाँ की जलवायु और मिट्टी चावल की खेती के लिए उपयुक्त हैं ।

2. **उत्तर प्रदेश :** उत्तर प्रदेश में भी चावल की खेती बड़े पैमाने पर होती है । यहाँ की गंगा-यमुना और अन्य नदियों की घाटियों में चावल की फसल प्रमुख रूप से उगाई जाती है ।

3. **तमिलनाडु :** तमिलनाडु भी चावल का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है । यहाँ की जलवायु और सिंचाई के उचित साधन चावल की खेती को बढ़ावा देते हैं ।

निष्कर्ष : चावल की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु, जलवायु में नमी और दलदली मिट्टी आवश्यक होती है । भारत में प्रमुख उत्पादक क्षेत्र जैसे पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में चावल की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है ।

Quick Tip

चावल की खेती के लिए जलवायु और मिट्टी की विशेषताएँ बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, जिनका ध्यान रखना आवश्यक है ताकि फसल की अच्छी पैदावार हो ।

अथवा

अभ्रक की उपयोगिता की विवेचना कीजिए एवं भारत में इसके किन्हीं दो उत्पादक क्षेत्रों का भी वर्णन कीजिए ।

उत्तर : अभ्रक (Mica) एक खनिज है जो मुख्य रूप से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, विद्युत उपकरणों, और अन्य उद्योगों में उपयोग होता है । यह एक चमकदार खनिज है जो ताप और विद्युत प्रतिरोधक के रूप में काम आता है ।

अभ्रक की उपयोगिता : 1. **इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में उपयोग :** अभ्रक का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में किया जाता है, खासकर डायोड, ट्रांजिस्टर, और कैपेसिटर जैसी विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं में । इसकी उत्कृष्ट विद्युत प्रतिरोधक क्षमता इसे विद्युत उपकरणों में उपयोगी बनाती है ।

2. **निर्माण उद्योग में उपयोग :** अभ्रक का उपयोग निर्माण उद्योग में भी होता है । यह पेंट और कोटिंग्स में मिलता है, जिससे उन्हें अधिक टिकाऊ और चमकदार बनाया जाता है ।

3. **लाइटिंग और सजावट में उपयोग :** अभ्रक का उपयोग सजावट के लिए भी किया जाता है । इसकी चमकदार सतहों का उपयोग लाइटिंग उपकरणों में, जैसे कि लाइटिंग डेकोरेशन और कांच की सजावट में किया जाता है ।

भारत में अभ्रक के प्रमुख उत्पादक क्षेत्र : 1. **राजस्थान :** राजस्थान अभ्रक का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है । यहाँ की मीनार, भीलवाड़ा और उदयपुर जिले में अभ्रक के विशाल खनिज संसाधन हैं ।

2. **बिहार :** बिहार भी अभ्रक के उत्पादन में महत्वपूर्ण राज्य है, खासकर किऊल और जमुई क्षेत्रों में ।

निष्कर्ष : अभ्रक एक बहुपरकारी खनिज है जो इलेक्ट्रॉनिक, निर्माण और सजावटी उद्योगों में उपयोग होता है । राजस्थान और बिहार जैसे राज्य इसके प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं ।

Quick Tip

अभ्रक के उपयोग की विविधता ने इसे विभिन्न उद्योगों में एक महत्वपूर्ण खनिज बना दिया है, और इसके खनन से भारत की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलती है ।

---

28. विश्व व्यापार संगठन (WTO) के क्रियाकलापों का वर्णन कीजिए ।

उत्तर : विश्व व्यापार संगठन (WTO) का उद्देश्य वैश्विक व्यापार व्यवस्था को सुदृढ़ और सुचारु बनाना है । यह एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जो वैश्विक व्यापार से संबंधित नियमों को नियंत्रित करता है और सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों का समाधान करता है ।
WTO के प्रमुख क्रियाकलापों का विवरण :
1. **व्यापार नियमों का निर्माण और निगरानी :** WTO के तहत देशों के बीच व्यापार के नियम बनाए जाते हैं । यह संगठन यह सुनिश्चित करता है कि सदस्य देशों के बीच व्यापार निष्पक्ष और बिना किसी अवरोध के हो । WTO द्वारा बनाई गई व्यापार संधियाँ जैसे GATT (General Agreement on Tariffs and Trade), जो वस्त्र, कृषि, और औद्योगिक उत्पादों के व्यापार पर कवर करती हैं, सदस्य देशों में लागू होती हैं ।

2. **व्यापार विवादों का समाधान :** WTO विवादों के समाधान के लिए एक प्रभावी प्रणाली प्रदान करता है । जब कोई देश किसी अन्य देश के साथ व्यापार संबंधों में किसी प्रकार की समस्या या विवाद उत्पन्न करता है, तो WTO उस विवाद का समाधान करता है । इसका उद्देश्य देशों के बीच व्यावसायिक संबंधों को बनाए रखना और विवादों को उचित तरीके से हल करना है ।

3. **व्यापार के लिए खुला वातावरण बनाना :** WTO अपने सदस्य देशों के लिए व्यापार के दरवाजे खोलने के लिए काम करता है । यह सभी देशों को समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करता है, जिससे विकासशील और विकसित देशों के बीच व्यापार में संतुलन बने ।

4. **विकसित देशों और विकासशील देशों के बीच संतुलन :** WTO यह सुनिश्चित करता है कि विकसित और विकासशील देशों के बीच व्यापार के संदर्भ में कोई भेदभाव न हो । यह विशेष रूप से विकासशील देशों को अपने उत्पादों के लिए बेहतर बाजार अवसर प्रदान करने के लिए काम करता है ।

निष्कर्ष : विश्व व्यापार संगठन ने वैश्विक व्यापार को सुचारु बनाने और विवादों का समाधान करने के लिए एक मजबूत मंच प्रदान किया है । यह संगठन देशों के बीच व्यापार के नियमों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और अंतरराष्ट्रीय व्यापार संबंधों को सशक्त बनाता है ।

Quick Tip

WTO का मुख्य उद्देश्य वैश्विक व्यापार को समृद्ध और निष्पक्ष बनाना है, ताकि सभी देशों को समान अवसर मिलें और आर्थिक विकास हो सके ।

अथवा

संगठित एवं असंगठित क्षेत्रकों में विभेद कीजिए एवं असंगठित क्षेत्रक के कर्मचारियों की समस्याओं की विवेचना कीजिए ।

उत्तर : संगठित और असंगठित क्षेत्र आर्थिक संरचनाओं के दो मुख्य घटक होते हैं, जिनमें मुख्य अंतर उनके संगठनात्मक रूप और कर्मचारियों के अधिकारों की स्थिति में है ।

संगठित क्षेत्र और असंगठित क्षेत्र के बीच विभेद :

1. **संगठित क्षेत्र :** संगठित क्षेत्र में वे उद्योग और संस्थाएँ शामिल होती हैं, जो सरकार द्वारा पंजीकृत होती हैं और उनके पास श्रमिकों के अधिकारों और भत्तों की सुरक्षा होती है । इसमें सरकारी या निजी क्षेत्र के बड़े संस्थान, कारखाने, और कंपनियाँ आती हैं । इसमें कर्मचारियों को पेंशन, वेतन, चिकित्सा लाभ और अन्य सुविधाएँ मिलती हैं । उदाहरण - रेलवेज, सरकारी कार्यालय, बड़े कारखाने आदि ।

2. **असंगठित क्षेत्र :** असंगठित क्षेत्र में वे उद्योग और कार्यस्थल आते हैं, जो किसी औपचारिक संरचना में नहीं आते और जहाँ कर्मचारियों को सुरक्षा या अन्य लाभ नहीं मिलते । इसमें छोटे व्यापार, घरेलू कार्य, अस्थायी श्रमिकों का कार्य आदि आते हैं । उदाहरण - निर्माण श्रमिक, घरेलू कामकाजी लोग, अनौपचारिक व्यापार आदि ।

असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों की समस्याएँ : 1. **कानूनी सुरक्षा का अभाव :** असंगठित क्षेत्र के कर्म-चारियों को कानूनी सुरक्षा का अभाव होता है । उन्हें न्यूनतम वेतन, कार्य समय, और अन्य श्रमिक अधिकारों का उल्लंघन होता है ।

2. **अस्थिर रोजगार :** असंगठित क्षेत्र के कर्मचारी अक्सर अस्थायी और अनिश्चित रोजगार में होते हैं, जिनमें स्थिरता का अभाव होता है । उन्हें नौकरी में सुरक्षा और पेंशन जैसी सुविधाएँ नहीं मिलतीं ।

3. **स्वास्थ्य और सुरक्षा की समस्याएँ :** असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों को कार्यस्थल पर उचित स्वास्थ्य और सुरक्षा उपायों का अभाव होता है, जिससे उनका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है ।

4. **कम वेतन और लम्बे कार्य घंटे :** असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों को अक्सर कम वेतन मि-लता है और कार्य के घंटे भी अधिक होते हैं, जिससे उनके जीवन स्तर में कोई विशेष सुधार नहीं हो पाता ।

निष्कर्ष : संगठित और असंगठित क्षेत्रों में बड़ा अंतर है, और असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों की कई समस्याएँ हैं जिनका समाधान करना आवश्यक है । सरकार को असंगठित क्षेत्र में कार्यरत श्रमिकों के अधिकारों की सुरक्षा और सामाजिक कल्याण के उपायों को बढ़ावा देना चाहिए ।

Quick Tip

असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए कानूनी सुरक्षा और कार्यस्थल पर स्वास्थ्य व सुरक्षा की स्थिति को सुधारने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है ।